विश्व में पिछले वर्ष हमारे देश ने सबसे अधिक वानस्पतिक तेल 166 लाख मेट्रिक टन आयात किया था इस वर्ष 2023–24 में 156 लाख मेट्रिकटन आयात करने का अनुमान है जो पिछले वर्ष के मुकावले 6.6 प्रतिशत कम होगा

भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर की फारमर फर्स्ट प्रोग्राम के अर्न्तगत मझगॉव और आलमपुर जाफराबाद के 20 गॉवों में कृषि एवं पशुपालन की परखी हुई तकनीकी धान्य और सब्जी की फसलों के उन्नतशील बीज, कृषि यन्त्र, मुज्जफरनगरी मेढ़ा, बरबरी और जमुनापारी बकरे एवं केंचुआ जैविक खाद का किसानों की भागीदारी से प्रदर्शन किये जाते है तथा किसानों को विभिन्न कृषक मेलों में भ्रमण कराया जाता है। इस वर्ष डा0 रणवीर सिंह, प्रधान अन्वेषक, फारमर फर्स्ट प्रोग्राम ने बताया यह दोनों सरसों की प्रजातियॉ पालारोधी और लवणता रोधी है यह किस्में 7680 टी.डी.एस तक के पानो पर उगायी जा सकती है। यह 12 विद्यत चालकता (ई.सी.) वाले पानी में भी उग सकती है। यह प्रजातियों को खारी भूमि और जहॉ पर पाला पड़ता है उसके लिये उपयुक्त है इनकी पैदावार खारी भूमि में 18 से 20 कुन्तल और सामान्य भूमि में 24 से 29 कुन्तल प्रति हेक्टेयर पैदावार होती है। सरसों के प्रक्षेत्रीय प्रदर्शन के लिये भारतीय कृषि अनसंधान परिषद, नई दिल्ली के केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधन संस्थान,करनाल से 25 कि0गा0 सी.एस.–58 तथा 25 कि0ग्रा0 सी.एस.–60 के प्रजनक बीज कमश 17 और 16 किसानों को बीज उत्पादन के लिये वितरित किया। इस प्रजाति की पैदावार 23 से 27 कुन्तल प्रति हेक्टेयर होती है 39 से 42 प्रतिशत तेल की मात्रा निकलती है। यह 137 से 153 दिन की अवधि में तैयार हो जाती है। इसकी बुबाई का समय 10 अक्टूबर से 30 अक्टूबर है। सरसों और राई शोध निदेशालय, भरतपुर से 50 कि0ग्रा0 गिरिराज प्रजाति का उन्नतशील बीज 34 किसानों को फील्ड प्रदर्शन के लिये वितरित किया है। कुल 100 कि0ग्रा0 सरसों (लाहा) के बीज 7 गॉवों के 60 किसानों को उनके गॉव में गोष्ठी आयोजित करके वितरित किया गया। इन सभी उन्नतशील प्रजातियों के उत्पादन की शस्य कियाओं को बताया। पिछले वर्ष किसानों को पूसा संस्थान की उन्नत प्रजातियॉ जैसे पूसा सरसों–30 और पूसा सरसों–25 का बीज दिया था जिनमें यूरिसिक एसिड और ग्लूकोसिनोलेटस कम पाया जाता है। जो स्वास्थ के लिये बहुत अच्छा है। बाजार में सरसों (कडुवे) तेल की मॉग अधिक है तथा आपूर्ति कम है। जिन किसानों ने पूसा बासमती–1847 धान–सरसों–सकंर मक्का की फसल शस्य चक अपनाते है उनकी आय में सबसे अधिक वृद्वि हो रही है। विदेशों से पाम आयल का आयात को कम करने के लिये किसानों को तेल उत्पादन में आत्म निर्भर बनने के लिये सरसों की खेती का क्षेत्रफल बढ़ाने पर जोर दे रही है। इस वर्ष 2024–25 के लिये सरसों का न्यूनतम समर्थित कीमत में रू0200 की भारत सरकार ने वृद्वि की है वर्तमान में एक कुन्तल सरसों की कीमत रू0 5650/– है। सरसों की फसल में किसान गुलाब के पौधे भी लगा सकते है इसकी कटाई के बाद संकर मक्का बाने से आमदनी बढ़ायी जा सकती है। बीज वितरण और किसानों की गोष्ठी आयोजन में भी अविनाश सिंह और श्री सूर्य प्रताप सिंह ने सहयोग किया।

डा0 रणवीर सिंह
प्रधान अन्वेषक
फारमर फर्स्ट प्रोग्राम
पशु आनुवंशिकी विभाग

स्वस्थ मृदा
समृद्ध किसान

स्वस्थ मृदा
उन्नत बीज
उन्नत खेती
समृद्ध किसान
MILLETS

स्वस्थ मृदा
उन्नत खेती
समृद्ध किसान
MILLETS

स्वस्थ मृदा
उन्नत बीज
उन्नत खेती
MILLETS

गिरिराज